जो बच्चे बेहतर महसूस करते हैं, वे बेहतर सीखते हैं

ललिता यदुवंशी

भरोसे पर आधारित एक अनुभव ने कई सम्बन्धों को गहरा किया और मुझे मौक़ा दिया कि मैं बच्चों द्वारा अपने व्यवहारों को संशोधित करने की हमारी अपेक्षाओं पर विचार कर सकूँ। इसने मुझे एहसास कराया कि कैसे स्कूल विद्यार्थियों और शिक्षकों, दोनों के लिए सीखने में सहायक माहौल प्रदान करता है। बेहतर जीवन मूल्यों को विकसित करने और आत्मसात करने के अवसर (स्कूल के माहौल में सुरक्षित महसूस करते हुए) हर दिन हमारे सामने ख़ुद को प्रस्तुत करते हैं। ये हमें सोचने-समझने के लिए एक आधार प्रदान करते हैं और हमें सार्थक जीवन जीने में मदद करते हैं। मैं कक्षा-2 के एक विद्यार्थी के साथ हुए अपने अनुभव को साझा करना चाहती हूँ। उसकी कहानी पिछले साल शुरू हुई जब वह कोविड-19 महामारी के बाद सितम्बर के महीने में स्कूल आना सीख ही रही थी। वह काफ़ी अधिक समय के लिए स्कूल से अनुपस्थित रहती थी जो सभी शिक्षकों के लिए चिन्ता का कारण था, क्योंकि बिना स्कूल आए और नियमित शिक्षा के बिना वह पीछे रह जाती थी। नियमित अन्तराल पर, उसकी कक्षा शिक्षक और अन्य शिक्षक उससे बात करते थे और समझाते थे कि उसके लिए नियमित रूप से स्कूल आना क्यों ज़रूरी है, लेकिन उनके प्रयास व्यर्थ रहे।

इस साल जून की शुरुआत में, वह कक्षा-2 में आई थी। मैंने उसका हाथ पकड़ा और उससे वादा लिया कि वह हर दिन स्कूल आएगी। वह एक मासूम मुस्कान से सहमत थी जो उसके चेहरे पर हमेशा रहती थी। उलझे बाल, गन्दी यूनिफॉर्म, अध्ययन सामग्री ग़ायब - मुझे नहीं पता था कि उसके साथ कहाँ से शुरू करना था। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि उसे कैसे समझाया जाए कि वह अच्छी आदतों को आत्मसात नहीं करने और अपनी पढ़ाई के साथ तालमेल नहीं रखने से कितना कुछ खो देगी। मैंने दोनों मसलों पर उससे और उसके पिता से भी बात की।

इस साल, स्कूल असेम्बली के दौरान कहानी कहने की गतिविधि एक अभिनव तरीक़े से की गई थी। कठपुतलियों की मदद से कहानियाँ सुनाई गईं। कक्षा में बच्चों के लिए एक कठपुतली कोना भी बनाया गया था। मैंने देखा कि कठपुतली शो शुरू होने के बाद से उसने ज़्यादा स्कूल आना शुरू कर दिया था। कभी उसे पक्षी के साथ खेलते हुए देखा जा सकता था और कभी-कभी, कक्षा में चीज़ों को व्यवस्थित करते हुए। कभी-कभी, वह अन्य बच्चों के बारे में शिकायत करती थी जो कठपुतलियों का ठीक से उपयोग नहीं करते थे।

जल्द ही वह हर दिन स्कूल आने लगी। और फिर, यह सवाल उठा कि उसे पढ़ने और लिखने का मन बनाने में कैसे मदद की जाए। हमारे पास भी कोई तैयार जवाब नहीं था। लेकिन कुछ तो किया जाना था।

हमने पढ़ने और लिखने के साथ अनौपचारिक संवाद के लिए दो समूह बनाए ताकि बच्चों को प्रेरित किया जा सके, हम उन्हें अच्छी तरह से जान सकें और समय के साथ, हम सीखने के उनके प्रयासों में सकारात्मक बदलाव देख पाएँ। इस दौरान, इस लड़की ने एक सरल कहानी और कविता पढ़ना सीखा। उसने हर दिन अपना होमवर्क करना शुरू कर दिया। वह असाइनमेंट प्राप्त करना पसन्द करती थी और सबसे महत्त्वपूर्ण बात, हमारी निरन्तर बातचीत ने हम दोनों के बीच एक सम्मानजनक सम्बन्ध बनाया।

कुछ समय बाद, उसने अन्य सभी बच्चों के साथ कक्षा में सीखना शुरू कर दिया। उसका पढ़ना अभी भी धीमा था। तभी एक 'स्माइली फ्लावर' ने बच्चों में हलचल मचा दी। चौतरफ़ा विकास की दिशा में 'अच्छे प्रयास' करने वाले बच्चों को एक स्माइली फ्लावर दिया जाता था। उनके 'अच्छे प्रयासों' का दो से तीन पंक्तियों में वर्णन किया जाता था और यह स्माइली फ्लावर पूरी कक्षा के सामने उन्हें सौंपा जाता था। एक दिन, उसने पूछा, "क्या मुझे भी यह मिलेगा?" मैंने कहा, "हाँ, हर कोई इसे हासिल कर सकता है। हर कोई एक क्षेत्र या दूसरे क्षेत्र में बेहतर कर सकता है। तुम भी ऐसा कर सकती हो।" उसके प्रयासों में सुधार होता दिखा।

इसी बीच एक और घटना हुई। उसके बालों को शायद ही कभी कंघी किया जाता था। मैंने उससे कहा, "तुम अपने बालों को अच्छे से कंघी करके स्कूल आया करो।" उसने जवाब दिया, "मम्मी ऐसा नहीं करती हैं।" मैंने कहा, "ठीक है, हम मम्मी से बात करेंगे।" मैंने एक सीनियर छात्रा से कंघी उधार ली और उसके बालों को कंघी करके पोनीटेल बाँध दी। "घर जाकर इसे अपनी माँ को दिखाओ और उनसे हर दिन तुम्हारी इस तरह की पोनीटेल बनाने के लिए कहो", मैंने उससे कहा।

उस दिन, वह अपनी सभी कक्षाओं में अपनी पोनीटेल को घुमाती रही और आईने में देखती रही। मुझे नहीं पता कि वह क्या सोच रही थी, लेकिन उसके चेहरे पर मुस्कान थी।

अगले दिन जब वह स्कूल आई तो वह एक बदली हुई इन्सान थी! ऐसा लगा मानो वह आगे बढ़ने और ख़ुशी के साथ सीखने के लिए अपने भीतर एक विश्वास लेकर आई थी। अब तो रोज़ लंच के बाद वह मेरे पास आती है, खूब बातें करती है, पढ़ती है और एक-दो कहानी सुनाती है। उसने अपने सीखने के क्षितिज को व्यापक बना दिया है। ख़ाली समय में वह इंग्लिश रूम में जाती है और पढ़ने की कोशिश करती है। अब दूसरे बच्चे उसे नहीं छेड़ते; वे एक समूह में एक-दूसरे के साथ काम करते हुए पूरे मन से भावनात्मक सहयोग प्रदान करते हैं।

यह सिर्फ़ एक अनुभव से कहीं अधिक था; यह मेरे लिए सीखने का अवसर था। अच्छे स्वास्थ्य और ख़ुशी का अनुभव स्कूल के माहौल में ख़ुशहाली के पहलुओं को समझने की कोशिश में महत्त्वपूर्ण है। इसमें मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य, शारीरिक और भावनात्मक सुरक्षा और अपनेपन, उद्देश्यपूर्णता, उपलब्धि और सफलता की भावना शामिल है। ये हमें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं और हमें एक-दूसरे से जुड़ने में मदद करते हैं, जिससे काम करने का सुखद माहौल बनता है। इस कारण से, मुख्य पहलुओं पर स्कूल समूह के भीतर औपचारिक और अनौपचारिक संवाद अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। स्कूल के अन्दर और बाहर बच्चों की सफलता एक लोकतांत्रिक संस्कृति में अपनी क्षमताओं का उपयोग करने की उनकी क्षमता पर निर्भर करती है। इसलिए, स्कूल के वातावरण में बच्चों के शैक्षणिक प्रदर्शन, व्यवहार और सामाजिक समायोजन में सुधार के प्रयास किए जाने चाहिए।

शिक्षकों और स्कूल के स्टाफ को निम्नलिखित काम भी करने चाहिए :

- बच्चों से बातचीत करें।
- शिक्षण की अवधारणाओं के प्रभावी और नवीन तरीक़ों से अवगत रहें।
- विद्यार्थियों को चुनौतियों का सामना करने और बोरियत से बचने के लिए उनकी मनोवैज्ञानिक और शारीरिक क्षमताओं में सुधार करने में मदद करें।
- विद्यार्थियों को भावनात्मक सहयोग प्रदान करें।
- शारीरिक फिटनेस से सम्बन्धित पहलुओं पर उचित निर्णय लें।
- संवाद करने की क्षमता विकसित करने में विद्यार्थियों की मदद करें।
- सार्थक और भरोसेमन्द सम्बन्ध बना सकने में विद्यार्थियों की मदद करें।
- स्कूल की प्रक्रियाओं में थोड़ा लचीलापन लाएँ।
- सहयोगात्मक कार्य के अवसर पैदा करें।

एक शिक्षक के रूप में, मुझे लगता है कि किसी भी शिक्षक के लिए यह बहुत महत्त्वपूर्ण है कि वह अपने काम में प्रेरित, कुशल, जोश से भरा, ईमानदार और चिन्तनशील हो। स्कूल की स्वस्थ संस्कृति कार्यस्थल को सार्थकता प्रदान करने की दिशा में बहुत मददगार होती है। यह सभी की ऊर्जा और प्रभावशीलता को आगे बढ़ाने में सहायक होती है। बच्चों की ख़ुशहाली और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच सीधा सम्बन्ध है। उपलब्धि के लिए बच्चों की ख़ुशहाली का ध्यान रखना एक महत्त्वपूर्ण शर्त है और ख़ुशहाली के लिए उपलब्धि आवश्यक है।

स्कूल के वातावरण को पोषित करने के लिए नीचे कुछ विशिष्ट प्रक्रियाएँ दी गई हैं, जिन्हें हम सभी शिक्षक और स्कूल प्रशासक मिलकर अपने स्कूल में स्थापित करने का प्रयास करते रहते हैं। ये प्रक्रियाएँ सहारा देने वाले वे मज़बूत सम्बन्ध बनाती हैं, जो बच्चों को उनके सुविधा क्षेत्रों से बाहर निकलने और नए विचारों और सोचने के तरीक़ों का पता लगाने के लिए भावनात्मक संसाधन प्रदान करते हैं, क्योंकि अकादमिक उपलब्धि के लिए ये बुनियादी ज़रूरतें हैं।

एक पोषक वातावरण बनाने की दिशा में हमारे प्रयासों में निम्नलिखित बातें शामिल हैं :

- बच्चों की प्रस्तुतियों को सुनने के लिए सभी के एक स्थान पर एकत्रित होने के साथ दिन की एक सुखद शुरुआत होना। इसके अतिरिक्त, वे अपनी राय व्यक्त करने के लिए एक सम्मानजनक अवसर प्राप्त करने की भावना के साथ स्वयं को संचालित करते हैं।
- स्कूल के समय का उपयोग बच्चों और एक-दूसरे के साथ हमारे सम्बन्धों को गहरा करने के लिए किया गया है, चाहे हम कक्षा में हों, खेल के मैदान में, पुस्तकालय में या फिर मध्याह्न भोजन और सामुदायिक यात्राओं आदि के दौरान। शिक्षकों और बच्चों के बीच अनौपचारिक बातचीत सभी के लिए ब्रेक लेने, दोस्तों के साथ खाने और गपशप करने, एक साथ पढ़ाई करने, एक-दूसरे की मदद करने, पारिवारिक परिस्थितियों के बारे में जानने आदि का अवसर होता है।
- बच्चे किसी पर विश्वास करके अपने मन की बातें बताना चाहते हैं और एक बार जब वे किसी शिक्षक को चुन लेते हैं, तो उस शिक्षक को एक सलाहकार की भूमिका निभाना चाहिए। ऐसी स्थिति में सार्थक संवाद आवश्यक है, जो स्थिति के आधार पर समूह में या व्यक्तिगत रूप से किया जाता है। इसके लिए एक समूह भी बनाया गया है।

- प्राथमिक कक्षाओं में, पीरियड की अवधि बढ़ा दी गई थी। जब बच्चों का कक्षा पीरियड छोटा होता है, तो उन्हें शिक्षण और सीखने के कई तरीक़ों का अनुभव करने, प्रश्न पूछने, अपनी शिक्षा पर चिन्तन करने और अपने मन की बात कहने का समय मिलने की सम्भावनाएँ कम होती हैं। नतीजतन, उनकी अकादमिक जुड़ाव की भावना प्रभावित होती है। लिहाजा पीरियड की लम्बी अवधि के आधार पर बच्चों के साथ सीखने के विभिन्न तरीक़ों पर काम किया जा रहा है।
- पढ़ने की संस्कृति बनाने की दिशा में प्रयास जारी हैं और सभी कक्षाओं में अधिकांश बच्चे पढ़ने के साथ सम्बन्ध बना पाते हैं। वे विभिन्न मंचों पर अपनी आवश्यकताओं और रुचियों से सम्बन्धित पठन सामग्री का चयन करते हैं और उन्हें साझा करते हैं। इसका प्रभाव उनकी वैचारिक और व्यावहारिक क्षमताओं को बढ़ा रहा है, जिससे वे बेहतर महसूस कर रहे हैं। वे अपनी डायरियों में लिखते भी हैं।

सरल शब्दों में कहें तो : 'जो बेहतर महसूस करते हैं, वे बेहतर सीख सकते हैं।'



चित्र-1 : कक्षा की गतिविधियों में संलग्न अज़ीम प्रेमजी स्कूल, टोंक के विद्यार्थी।



चित्र-2 : खेल के मैदान पर अज़ीम प्रेमजी स्कूल, टोंक के विद्यार्थी।



ललिता यदुवंशी टोंक, राजस्थान स्थित अज़ीम प्रेमजी स्कूल में भाषा शिक्षिका हैं। उन्होंने शिक्षा और हिन्दी साहित्य में स्नातकोत्तर डिग्रियाँ हासिल की हैं। उनकी रुचियों में पढ़ना, संगीत सुनना, फ़िल्में देखना, नई जगहों पर जाना और बच्चों के साथ बातचीत करना शामिल है। उनसे *lalita.yaduvanshi@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : निशांत राना **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय